मिथिलाक प्रमुख राजवंश

प्रारंभिक कालमे सूर्यवंशीय राजा निमिक पुत्र मिथि भेलाह । हुनकहि नाम पर एहि भूमिक नाम पड़ल मिथिला । उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूबमे कोशी आ पश्चिममे गंडकी धरि एकर विस्तृत सीमाक उल्लेख मिथिलाक प्रख्यात विद्वान् कवीश्वर चन्दा झा अपन काव्यमे कयलनि अछि ।

राजा जनक ब्रह्मज्ञानी आ कर्मयोगी राजा छलाह । हिनक राज्यकालमे सर्वत्र शान्ति आ सद्भाव पसरल छल । अनेकानेक यज्ञक कर्ता आ संरक्षक छलाह । प्रजापालक राजा सीरध्वज जनकक पुत्री सीताक विवाह अयोध्या नरेश दशरथक पुत्र श्रीरामसँ भेल । राजा जनक 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' केँ आधार बनाय राज्यकार्य कयलनि आ प्रजाक संग यथोचित व्यवहार कयलनि । जनकाधीन राज्यक चतुर्दिक विकास भेल आ शासन पद्धति, राजनीति, अर्थनीति, दण्डनीति, समाज विकासनीति, विद्या प्रचार आदि खूब भेल । मानव जीवनक चारित्रिक एवं बौद्धिक विकास चरमोत्कर्ष पर छल । विश्वक प्रथम दार्शनिक राजा जनक आओर याज्ञवल्क्यक दर्शन तथा ज्ञानक आलोकसँ सम्पूर्ण आर्यावर्त आलोकित छल ।

जनक वंशक अन्तिम राजा कराल जनकक संग एहि वंशक अन्त भऽ गेल । सहस्रो वर्ष धरि मिथिला राजक स्वतंत्र अस्तित्वक इतिहास नहि भेटैछ । जनक राजवंश तथा वज्जि महासंघक विघटनक समयसँ कर्णाट वंशक शासनक पूर्व धरि मिथिलाक इतिहास निरन्तर पराजय तथा दासताक इतिहास रहल ।

कर्णाट-वंश (1097 ई०-1324 ई०)

नान्यदेव– मिथिलामे कर्णाटवंशीय (वा सिमराँओ वंश) नान्यदेवक

राज्यारम्भ 1097 ई०मे भेलनि । जाहि समयमे नान्यदेव सिंहासनारूढ़ भेलाह ताहि समयमे मिथिला राज्य अपन पड़ोसी राज्य नेपाल, बंगाल, दक्षिण बिहारक पाल तथा काशी-कन्नौजक गढ़वाल राज्यसँ आक्रांत छल । मुदा नान्यदेव अपन कुशल रणनीति आ पराक्रमसँ मिथिला राज्यकेँ सुरक्षा प्रदान कयलनि । ई शूर रणकुशल ओ विद्वान् तँ छलाहे, कला-मर्मज्ञ, साहित्य-रसिक ओ संगीत शास्त्रक ज्ञाताक संग-संग वैदुष्य ओ कलाकारक सहृदय संरक्षक सेहो । इतिहासकार लोकनि हिनक शासनकाल पचास वर्षक (प्रायः 1147 ई० धरि) मानलनि अछि । एहि अन्तरालमे हिनक नेपाल-विजयक सूचना सेहो भेटैत अछि । हिनका दू गोट पुत्र छलथिन- 1. मल्लदेव आ 2. गंगदेव । मल्लदेव शूरवीर आ पराक्रमी छलाह मुदा किछु कारणवश पिताक विरुद्ध भऽ विभिन्न राज्याधिपतिक आश्रित भऽ रहलाह ।

गंगदेव– नान्यदेवक पश्चात हुनक पुत्र गंगदेव 1147 ई० मे शासनारूढ़ भेलाह । गंगदेवकेँ सेहो नेपालक राजा आ गौड़ देश (मालदह)क राजासँ सदिखन विवाद होइत रहलनि मुदा गंगदेव अपन मंत्री श्रीधरदासक सहयोगसँ उत्तम रीतिएँ राज्यकार्य करैत रहलाह । गंगदेव जनहितमे अनेक प्रशासनिक सुधार कयल, अनेक निंद्य रूढ़िक उन्मूलन कयल तथा राजक आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कयल । प्राचीन भग्नावशेष आ शिलालेखक आधार पर ई कहल जाइत अछि जे अन्हरा ठाढ़ी स्थित कमलादित्य स्थानमे हिनकहि समयमे विष्णुमूर्ति स्थापित भेल, दरभंगामे गंगासागर पोखरिक निर्माण सेहो हिनकहि नाम पर भेल अछि । ई विद्या आ विद्वान्क आश्रयदाता छलाह ।

नरसिंह देव– गंगदेवक देहावसानक उपरान्त हुनक पुत्र नरसिंह देव प्रायः 1187 ई० मे राज्यारूढ़ भेलाह । राज्यक सुरक्षा हेतु हिनकहुँ युद्ध करय पड़लनि । परम्परानुसार ई वीर योद्धाक रूपमे प्रशस्त छथि । ई स्वयं एवं हिनक मंत्री रामदत्त

दुनू साहित्य रसिक ओ लेखक छलाह । रामदत्त 'दान-पद्धति' नामक ग्रंथक सृजन कयलनि । ई अपन शासनावधिमे अनेक देवालय एवं पोखरिक निर्माण कराओल ।

रामसिंह देव– अपन पिता नरसिंह देवक पश्चात रामसिंह देव प्राय: 1225 ई०मे शासनारूढ़ भेलाह । ई सर्वतोभावेन विद्वान्, वीर आ पराक्रमी शासक छलाह । हिनक शासनावधिमे प्रजाक हितकारी कतेको सामाजिक, धार्मिक ओ प्रशासनिक सुधारक उल्लेख इतिहासज्ञ लोकनि कयलनि अछि । तेँ हिनक शासनकेँ कतेको विद्वान् आदर्श मानलनि अछि । कतेको विद्वान् पण्डित वर्गादि हिनक राज्याश्रित छलाह । हिनक शासनकालमे संस्कृत साहित्यक अभूतपूर्व उन्नति भेल । अनेको टीकाग्रन्थ तथा शास्त्र सभक प्रणयन भेल । समग्र रूपेँ एहि कालक मिथिलाञ्चल बौद्धिक गतिविधिक केन्द्र रहल ।

ई स्वयं पण्डितो छलाह तेँ पण्डित लोकनिकेँ एकत्रित कऽ सम्यक विचारोपरांत धर्मशास्त्रादि नाना विषयक निबंधक रचना कयलनि ।

ग्रंथक रचयिता लोकनि ग्रंथक प्रामाणिकतामे हिनक उपाधिक भनिताक प्रयोग करथि, यथा- 'भुजबल भीम', 'भीम पराक्रम' आदि । रामसिंह देव अनेक पोखरि ओ मंदिरक निर्माण सेहो करबओलनि ।

शक्तिसिंहदेव– पिताक मृत्योपरांत महाराजा शक्तिसिंहदेव गद्दी पर बैसलाह । ई उच्चकोटिक वीर, साहसी आ पराक्रमी छलाह । हिनक शूर-वीरताक प्रतापसँ प्रभावित भऽ दिल्लीक बादशाह लोकनि युद्धमे सहायतार्थ हिनका सादर आमंत्रित करथि । मुदा शक्तिसिंह कठोर, निरंकुश ओ स्वेच्छाचारी शासकक रूपमे जानल जाइत छथि । इएह कारणेँ जनता, अधीनस्थ सामंत ओ अधिकारी वर्ग हिनकासँ असंतुष्ट रहय लगलनि । मुसलमान सभसँ संघर्ष ओ व्यक्तिगत स्वभावक

कारणेँ हिनक शासनक अन्तिम चरण सुखद नहि रहल ।

हरिसिंह देव– पिताक देहावसानक बाद महाराज हरिसिंह देव दस–बारह वर्षक अवस्थामे लगभग 1303 ई॰ मे सिंहासनारूढ़ भेलाह । यद्यपि जखन ई शासनारूढ भेलाह ताहि समयमे नाबालिग रहथि तेँ राजकाज मंत्रीए द्वारा चलय । मंत्री देवादित्य ठाकुरक सहायता आ उत्तम सूझ–बूझसँ राजकाज सुलभतापूर्वक चलय लागल । चण्डेश्वर ठाकुर रचित 'कृत्यरत्नाकर' ग्रन्थक आधार पर ई सिद्ध होइत अछि जे देवादित्य ठाकुरक बाद हुनक पुत्र वीरेश्वर ठाकुर तत्पश्चात हुनक पुत्र चण्डेश्वर ठाकुर क्रमशः मंत्री भेलाह । स्वयं हरिसिंह देव चण्डेश्वर ठाकुरक मंत्रित्व काल धरि बालिग भऽ चुकल छलाह । ई वीर पराक्रमी आ दानीक संगहि प्रजाक हितक प्रबल पक्षपाती छलाह । ई कतेको नवीन सामाजिक सुधारकेँ प्रचलित कयलनि । नवीन कुलीन प्रथाकेँ एतय स्थापित कयल । 'मिथिला–पंजी–प्रबंध' मे हुनक सामाजिक सुधारक उल्लेख भेटैत अछि ।

कृत्यरत्नाकर, दानरत्नाकर, राजनीतिरत्नाकर आदि प्रसिद्ध ग्रंथक रचना हिनकहि शासनकालमे भेल ।

मुदा हिनक शासनक अन्त दुःखद भेल । मिथिला राज्य पर मुस्लिम शासक गयासुद्दीन तुगलक आक्रमण कऽ कर्णाट चूड़ामणिकेँ मिथिला राज त्यागि नेपाल जाय पड़लनि । ओतय ई भात गाँवमे अपन राजवंशक स्थापना कयलनि तथा जीवनपर्यन्त शासन कयलनि । मुदा मिथिलाञ्चल, कर्णाटवंशक शासन–कौशलसँ वंचित भऽ गेल ।

तत्पश्चात किछु दिन धरि मिथिला मुसलमान शासकसँ भयाक्रांत छल । पुनः युगचक्र बदलल आ मिथिला राज्य दिल्ली सुल्तानक कृपासँ ओइनवार वंशीय कामेश्वर ठाकुरकेँ प्राप्त भेलनि । सुगौना वंशक नामसँ सेहो जानल जायवाला एहि

वंशमे सभ राजा रानी मिलाकऽ पन्द्रह गोट भूपति लगभग पौने दू सय वर्ष धरि राज कयलनि ।

ओइनवार वंश (1353 ई०-1526 ई०)

कामेश्वर ठाकुर- कामेश्वर ठाकुर 'राय' वा 'राइ' पदवी धारी छलाह । बहुतहुँ विद्वान लोकनिक मत छनि जे कामेश्वर राजा नहि छलाह । मुदा दुर्गाभक्तितरंगिणी वा दुर्गोत्सव पद्धतिक आधार पर ई सिद्ध होइत अछि जे ई ओइनवार वंशीय प्रथम राजा छलाह । कहल जाइत अछि जे फिरोजशाहक प्रिय मित्र छलथिन भोगीश्वर तेँ ओ कामेश्वर ठाकुरकेँ पदच्युत कऽ भोगीश्वर ठाकुरकेँ शासन कार्य चलयबा लेल देलथिन । कतहुँ इहो कहल जाइत अछि जे कामेश्वर ठाकुर राजपत्रित आ सिद्धपुरुष छलाह तेँ राजकार्यसँ दूर रहय चाहथि तेँ स्वेच्छा सँ छोड़ि देलनि वा पुत्रक हितार्थ गद्दी छोड़ि देने होथि से संभव । एतबा धरि निश्चित बुझना जाइछ जे ई ओइनवार वंशीय प्रथम ब्राह्मण राजा छलाह आ हिनक बाद भोगीश्वर ठाकुर गद्दी पर बैसलाह । कामेश्वर ठाकुरकेँ तीन गोट पुत्र छलथिन–कुसुमेश्वर, भवेश्वर आ भोगीश्वर । एहिमे कुसुमेश्वर सन्तानहीन छलाह तेँ स्वेच्छासँ राज्य प्रबन्धक भार मात्र लऽ फराक भऽ गेलाह । भवेश्वर सेहो एहि कार्य सभसँ पृथक भऽ गेलाह । तेँ अन्तमे भोगीश्वर ठाकुर शासनारूढ़ भेलाह ।

भोगीश्वर ठाकुर– पिता कामेश्वर ठाकुरक उपरांत भोगीश्वर ठाकुर गद्दी पर बैसलाह आ सफलतापूर्वक राजकार्य चलौलनि आ 1360 ई०मे हिनक देहावसान भऽ गेलनि ।

गणेश्वर ठाकुर– भोगीश्वर ठाकुरक मृत्योपरांत शासनार्थ किछु सभासद गणेश्वर ठाकुर आ भवसिंहक बीचमे विवाद उत्पन्न भेला पर अन्ततः गणेश्वर ठाकुरक पक्षक जीत भेल आ गणेश्वर ठाकुर शासनारूढ़ भेलाह । परंच विवाद

सुनगैत रहल आ भवेश्वरक पुत्र हरिसिंह आ त्रिपुरा सिंह गणेश्वरक विरुद्ध षडयंत्र रचय लगलाह । गणेश्वर ठाकुर साहित्यप्रेमी छलाह तेँ अपन सभामे विद्वान लोकनिकेँ आश्रय दऽ अपन पूर्वक परिपाटीक रक्षा कयलनि । मुदा ई स्थिर नहि रहि सकलाह । कारण जे एकटा राज्यालोभी मुसलमान आक्रमणकारी असलान हिनका छलसँ 1371 ई॰मे मारि देलकनि ।

कीर्तिसिंह–गणेश्वर ठाकुरक दू पुत्र भेलाह –वीर सिंह आ कीर्तिसिंह । हिनका महाराजाधिराज सेहो कहल गेल । वीरसिंह राज्यारूढ़क पूर्वहि मुसलमान आक्रामक असलानक संग युद्धमे मारल गेलाह ।

कीर्तिसिंह वीर आ पराक्रमी शासक छलाह । विद्यापतिक कीर्तिलतामे कीर्तिसिंहक वीरताक विशद वर्णन कयल गेल अछि । हिनक शासन काल 1402 ई॰ सँ 1410 ई॰ धरि रहल । ई संतानहीन छलाह ।

भवसिंह– कीर्तिसिंह, राजसिंह आ वीर सिंहक संतानहीन रहबाक कारणेँ कामेश्वर ठाकुरक कनिष्ठ पुत्र भवसिंह प्रायः वृद्धावस्थामे राज्यारूढ़ भेलाह । हिनक शासन कालमे साहित्यक सम्यक विकास भेल । प्रतिभासम्पन्न गोनू झा, न्यायतत्व-चिन्तामणिक रचयिता महान न्याय दार्शनिक आ मीमांसक गंगेश उपाध्याय, हुनक पुत्र आ शिष्य वर्धमान उपाध्याय आदि विद्वान हिनकहि शासन कालमे मिथिलाक ख्याति बढ़ौलनि । ई लगभग 30 वर्ष धरि शासन कयलनि ।

देवसिंह–भवसिंहक पश्चात हुनक ज्येष्ठ पुत्र उत्तराधिकारी भेलाह ।

इहो अपन पितेक सदृश दानी पराक्रमी आ विद्वानक संरक्षक छलाह । हिनकहि प्रेरणासँ विद्यापति 'भूपरिक्रमा' लिखलनि ।

ई अपन राजधानी देवकुली वर्तमान देकुलीकेँ बनौलनि । सकरी लग ई एक गोट विशाल पोखरिक निर्माण कयलनि । शिव सिंह आ पद्मसिंह हिनक दू गोट पुत्र छलथिन ।

शिवसिंह – ओइनवार वंशक सुप्रसिद्ध शासक शिवसिंह भेलाह । ई अपन पितेक शासन-कालसँ राज्य कार्यमे सहयोग आ सक्रियता बढ़ौलनि । स्वतंत्र मनोवृत्तिक आ विद्यानुरागी शिवसिंह बालसखा विद्यापति हिनक पथ प्रदर्शक, परामर्शदाता आ जीवनी लेखक रहथि । उदार प्रकृतिक शिवसिंह शस्त्र ओ शास्त्र दुनूमे निपुण छलाह । मिथिलामे अपन स्वतंत्र मुद्रा चलौनिहार ई प्रथम शासक छलाह । विद्या आ विद्यानुरागीक संरक्षण ई अपन कुलानुसार कयलनि । हिनक शासनकालमे अनेकानेक ग्रंथक रचना तँ भेबे कयल परंच विशेष बात ई जे हिनकहि समयमे मैथिलीमे रचना सेहो प्रारंभ भऽ गेल, जे विद्यापतिक पदावलीसँ स्पष्ट होइत अछि । मुदा हिनक अन्त दुःखद भेल । ई सुलतानकेँ कर देब बन्द कऽ देलनि । यद्यपि एहिमे हिनका अल्प सफलता भेटलनि मुदा एहिसँ कुपित सुलतान आक्रमण कऽ बन्दी बना लेलकनि जिनका कविकोकिल विद्यापति अपन काव्य शक्तिसँ (कविता सुनाकऽ) मुक्त करौलनि । एहि कथामे विद्वानक बीच मत विभिन्नता अछि, किछु विद्वानक मत छनि जे ई युद्धमे मारल गेलाह, किछु मतानुसारे ई युद्धमे परास्त भऽ जंगलक रास्तासँ परा नेपाल शरण लेलनि तत्पश्चात अज्ञात भऽ गेलाह । आ हुनक पटरानी लखिमा राजगद्दी पर बैसली ।

रानी लखिमा देवी– अपन पति शिवसिंहक दुःखद अन्त भेलाक बाद रानी लखिमा देवी शासनक कार्यभार उठौलनि आ 1416 सँ 1428-29 धरि

लगभग 12 वर्ष धरि निष्कंटक राजकार्य चलौलीह । प्रगतिशील विचारक, प्रत्युत्पन्नमति, परम विदुषी आ कवयित्री रानी लखिमा अपन पतिए सदृश विद्यानुरागी आ साहित्य सेवीक संग संग विद्वानक संरक्षिका छलीह । हुनक मैथिल समाजमे विकौआ-विषयक व्यंग्य रचना विद्वानक बीच चर्चित आ प्रशंसित भेल । विद्यापति जहिना शिवसिंहक शासकत्वमे समादृत आ संरक्षित छलाह तहिना रानी लखिमाक शासनमे सेहो विद्यापति सेहो पूर्ववते आदरभाव रखलाह ।

पद्मसिंह– रानी लखिमा देवीक पश्चात शिवसिंहक छोट भ्राता पद्मसिंह 1430 ई॰मे गद्दी पर बैसलाह आ हिनक मृत्यु 1430-31 ई॰मे भेलनि । हिनक शासनकाल अत्यल्प रहल । ओना इहो अपन पूर्वजक सदृश साहित्य आ संस्कृतिकेँ अक्षुण्ण रखैत आदर कयलनि परंच कहल जाइछ जे ई मुसलमान शासकक बुद्धि-विचारसँ शासनक कार्य चलौलनि जाहिसँ मैथिल समाजमे असंतोष व्याप्त भेल आ लोक उत्साहहीन होमऽ लगलाह ।

विश्वासदेवी– पद्मसिंहक बाद हुनक प्रिय रानी विश्वास देवी एहि वंशक दोसर महिला शासक भेलीह आ बारह वर्ष धरि । घटना विहीन निष्कंटक शासन कयलीह । इहो अपन पूर्वजे जकाँ विद्वान आ साहित्यक संरक्षिका आ आश्रयदात्री छलीह । हिनकहि शासन कालमे विद्यापति ''शैवसर्वस्वसार'' तथा 'गंगावाक्यावली' रचना कयलनि । ई अपना नाम पर बसौली नामक गाम बसा ओकरहि अपन राजधानी सेहो बनौलनि । ई निःसंतान स्वर्गवासी भेलीह ।

हरिसिंह देब– विश्वासदेवीक पश्चात देवसिंहक अनुज आ भवसिंहक कनिष्ठ पुत्र हरिसिंह देव शासनारूढ़ भेलाह । इहो अपन पूर्वजक कृत्यकेँ अक्षुण्ण रखलनि । हिनक शासनकाल अल्पावधिक रहल ।

नरसिंह देव– हरिसिंह देवक पश्चात नरसिंहदेव गद्दी पर बैसलाह आ पूर्व शासकक भाँति वीरताक परिचय दैत साहित्यिक, प्रशासनिक आ न्याययिक कार्य सम्पन्न कयलनि । हिनकहि समयमे कवि कोकिल विद्यापति 'विभागसार'क रचना कयलनि । हिनका धीरमती आ हीरा नामक दुइ गोट पत्नी छलथिन, दुनू पत्नीसँ दू-दू बालक भेलनि । धीरसिंह (उपनाम-हृदयनारायण) आ भैरवसिंह (रूपनारायण) तथा हीरा देवीसँ चन्द्र सिंह आ दुर्लभ सिंह(रणसिंह) छलनि ।

एवं क्रमे 1460-62 धरि राज-पाटक कार्य कऽ स्वर्गवासी भऽ गेलाह ।

धीरसिंह– नरसिंहदेवक पश्चात हुनक ज्येष्ठ पुत्र धीरसिंह राज्यासीन भेलाह । शूर-वीर महादानी छलाह । विद्यानुरागी आ कलाप्रेमी धीरसिंह विद्वानक पोषक आ साहित्य संरक्षक छलाह । विद्यापति, मधुसूदन मिश्र, रत्नेश्वर, म.म. वटेश्वर, म.म. नरहरि प्रभृत विद्वान हिनक सभासद छलाह ।

भैरवसिंह– धीरसिंहक पश्चात हुनक अनुज भैरव सिंह (रूपनारायण) सिंहासनारूढ भेलाह । आ पैंतीस वर्ष धरि शासन कार्य कऽ 1515 ई० मे एहि असार संसारकेँ त्यागि देलनि । प्रशासनिक आ राजनीतिक गुणसँ सम्पन्न, साहित्य आ साहित्य सेवीक संरक्षक छलाह, हिनकहि प्रेरणासँ वाचस्पति, 'विवाद-चिन्तामणि' तथा 'व्यवहार-चिन्तामणि', विद्यापति 'दुर्गाभक्ति तरंगिणी' नामक पुस्तकक रचना कयलनि । एकर अतिरिक्त अनेकानेक महत्त्वपूर्ण आ शासनसँ सम्बन्धित पुस्तकक रचना भेल । कतेको पोखरिक निर्माण करौलनि आ तुला-पुरुष दान कयलनि ।

रामभद्र देव– भैरवेन्द्रक पुत्र रामभद्र देव शासनारूढ़ भऽ अपन वंशानुरूप कार्य कयलनि । हिनक शासनावधिक संबंधमे विद्वानक मण्डलीमे मतान्तर

अछि । तेँ कोनो एक प्रामाणिक मत नहि अछि । इहो साहित्य आ संस्कृतिक संरक्षक विद्वत्‌जनक पोषक छलाह ।

ई अपन राजधानी रामभद्रपुरकेँ बनौलनि आ विरुद रूपनारायणसँ मण्डित छलाह । हिनक पुत्र लक्ष्मीनाथ देव छलाह ।

लक्ष्मीनाथदेव– एहि वंशक अंतिम राजा लक्ष्मीनाथ देव छलाह हिनक विरुद्ध कंसनारायण छलनि । हिनक शासन कालमे मुसलमान आक्रामक लोकनिक नजरि मिथिला राज्य दिस गड़ल छल । एहना स्थितिमे दुर्बल व्यक्तित्वक लक्ष्मीनाथदेव शासनादि कार्यमे अक्षम आ असफल सिद्ध भेलाह परिणामस्वरूप नसरत शाह द्वारा 1526 ई० मे मारल गेलाह ।

तत्पश्चात ओइनवार वंशीय शासकत्व समाप्त भऽ गेल आ राजा विहीन राज्य मिथिलामे तीस वर्ष धरि अराजकताक स्थिति रहल । तदुपरांत खण्डवला वंश अपन प्रयाससँ मिथिला राज्य प्राप्त कयलनि ।

खण्डवला वंश– अकबरक समकालीन महेश ठाकुरक पूर्वज खण्डवा नामक ग्राममे वास करैत छलाह आओर तेँ हिनक कुल खण्डवला कुल (वंश) सँ प्रसिद्ध भेल । एहि वंशक प्रथम राजा महेश ठाकुर छलाह । महेश ठाकुरकेँ मिथिला राज्य प्राप्तिक संबंधमे कतेको कथा प्रचलित अछि । किछु मत अछि जे अकबर हिनक विद्वत्तासँ आकर्षित भऽ हिनका मिथिला राज्य प्रदान कयलनि । किछु मत अछि जे ई अपन विद्वान शिष्य द्वारा गुरु दक्षिणाक रूपमे प्राप्त कयलनि । कथा जे या जतेक हो मुदा ई निश्चित बुझाइछ जे खण्डवला-राजवंशक नींव मिथिलामे महेश ठाकुर देलनि । एहि कुलक बीस गोट राजा राज्य कयलनि ।

महेश ठाकुर–महेश ठाकुर खण्डवला कुलक संस्थापक प्रथम राजा भेलाह । हिनका चारि गोट पुत्र छलथिन यथा- रामचन्द्र ठाकुर, गोपाल ठाकुर परमानन्द ठाकुर आ शुभंकर ठाकुर । एहिमे ज्येष्ठ पुत्र रामचन्द्र ठाकुरक मृत्यु हिनकहि (महेश ठाकुर) जीवन कालमे अविवाहिते अवस्थामे भऽ गेलनि । ई 1556-1569 तक राज कयलनि । हिनक राजधानी 'भउर'मे छल ।

गोपाल ठाकुर–महेश ठाकुरक पश्चात हुनक द्वितीय पुत्र गोपाल ठाकुर शासनारूढ़ भेलाह जे 1569 सँ 1581 ई॰ तक शासन कयलनि । इहो अपन राजधानी भउरकेँ बनौलनि । भउरमे तत्समय पम्मार क्षत्रियक बास छलनि आ ओ लोकनि शक्तिशाली सेहो रहथि मुदा गोपाल ठाकुर हिनका लोकनि (पम्मार)केँ भउर छोड़ि देबा लेल विवश कऽ देलनि आ तत्पश्चात स्वयं काशी वास कयलनि ।

परमानन्द ठाकुर–गोपाल ठाकुरक काशी वासोपरांत हुनक अनुज परमानन्द ठाकुर शासन कार्यक भार सम्हारलनि ।

शुभंकर ठाकुर–परमानन्द ठाकुरक पश्चात शुभंकर ठाकुर सिंहासनारूढ़ भेलाह । ई अपना नाम पर दरभंगा लग शुभंकरपुर नामक गाम बसौलनि आ अपन राजधानी भउआराकेँ बनौलनि ।

पुरुषोत्तम ठाकुर–शुभंकर ठाकुरक मृत्योपरांत हुनक पुत्र पुरुषोत्तम ठाकुर मिथिला राज्यक राज्याधिकारी भेलाह जे 1617 सँ 1641 ई॰ धरि राज कयलनि ।

एवं प्रकारेँ क्रमशः नारायण ठाकुर, सुन्दर ठाकुर, राघवसिंह, विष्णु सिंह, नरेन्द्र सिंह, प्रताप सिंह, माधव सिंह, छत्रसिंह बहादुर, रूद्रसिंह बहादुर, महाराज

महेश्वर सिंह बहादुर, लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुर, रामेश्वर सिंह बहादुर आदि मिथिला राज्यक शासक भेलाह और कौलिक परम्पराक रक्षा करैत जनंहित कार्य करैत गेलाह ।

लक्ष्मीश्वर सिंह- महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक शासन काल 1880 सँ 1898 तक छल । ई उदार, दानी आ लोक हितैषी नरेश छलाह । विद्या आ कला प्रेमी छलाह आ तेँ विद्वान लोकनि हिनक राज्याश्रित प्राप्त कयलनि । जनहित आ लोकप्रियताक अनेकानेक कथा मिथिलामे प्रचलित अछि । हिनक शासकत्वमे अनेकानेक अस्पताल, विद्यालय महाविद्यालय, शिक्षणसंस्थान, पोखरि, देव मंदिर आदिक निर्माण भेल । सभसँ पैघ बात ई जे ई प्राचीन सभ्यता संस्कृतिकेँ अक्षुण्ण रखैत विभिन्न आधुनिक संस्था खोलि आ खोलबामे सहायता कऽ भविष्यक प्रति जागरूक कयलनि ।

रामेश्वर सिंह- लक्ष्मीश्वरक हिक पश्चात हुनक अनुज रामेश्वर सिंह सिंहासनारूढ़ भेलाह डॉ॰ औफ लिटरेचर आदि अनेको उपाधिसँ युक्त रामेश्वर सिंहके अंग्रेज सरकारसँ महाराजाधिराजक विरुद प्राप्त भेलनि अपन अग्रज सदृश इहो विद्वान आ विद्वानक संरक्षक, कला पोषक, उदार चरित आ निर्माण प्रिय छलाह । महाराजधिराज भारतक अनेकानेक प्रमुख नगर उपनगरादिमे राजभवन, पोखरि, मंदिरादिक निर्माण करौलनि तेँ हिनक तुलना दिल्लीक बादशाह शाहजहाँ सँ कयल जाइत छल । मधुबनी जिलान्तर्गत हिनक निर्मित भव्य विशाल राजभवन आ नगर राजनगरसँ प्रसिद्ध भेल । काशी-विश्वविद्यालयक निर्माणमे सेहो ई महामना पं॰ मदनमोहन मालीवीयजीकेँ अपार सहयोग कयलनि । एतबे नहि देशान्तर्गत विभिन्न प्रकारक विकासमे सेहो हिनक नीक भूमिका रहल । हिनका दू गोट पुत्र छलनि-महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह आ राजा बहादुर विश्वेश्वरसिंह ।

महाराजा कामेश्वर सिंह- ई गरीबक सहायतार्थ दरभंगामे 'कामेश्वर प्रिया पुअर होम'क स्थापना, संस्कृत विश्वविद्यालय, मिथिला विश्वविद्यालय एवं

संस्कृत विश्वविद्यालय आदि बहुतहुँ संस्थाक निर्माणमे जमीन आदि आवश्यकतानुसार दानमे दऽ विकासक मार्ग प्रशस्त कयलनि । महात्मा गाँधी आदि कांग्रेसक नेता लोकनिकेँ सेहो देश हितमे आर्थिक सहायता प्रदान कयलनि । एवं क्रमे विकास पुरुष महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' मे विश्वास करैत जनहित कार्य कयलनि । जमीन्दारी उन्मूलनसँ पहिनहि कामेश्वर सिंह अपन अनुज विश्वेश्वर सिंहकेँ दरभंगामे एक भव्य राजभवन तथा राजनगरक विशाल राज-प्रासाद दऽ ओतुका राजा बना देने छलाह ।

महाराज विश्वेश्वर सिंहक दू पुत्र-**जीवेश्वर सिंह** आ **शुभेश्वर सिंह** भेलाह । कामेश्वर सिंहकेँ संतति नहि छलनि तेँ हुनक उत्तराधिकारी विश्वेश्वर सिंहक ज्येष्ठ पुत्र जीवेश्वर सिंह भेलाह ।

◆◆◆

प्रश्न ओ अभ्यास

1. मिथिलाक नामकरण पर दू पाँती लिखू ।
2. मिथिला राज्यक चौहद्दी लिखू ।
3. नान्यदेव कोन वंशक शासक छलाह ?
4. दुर्गाभक्तितरंगिणी, शैवसर्वस्वसार आ पुरुष परीक्षाक लेखकक नाम कहू ।
5. ओइनवार वंशक कोन शासकक विरुद्ध 'कँसनारायण' छल ।
6. खण्डवाल वंशक प्रथम राजा के भेलाह ?
7. मिथिलाक कोन महिला शासक भेलीह ?
8. रामभद्रपुर कोन राजाक नाम पर अछि ?
9. कमलादित्य स्थान कतऽ अछि ?

◆◆◆

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

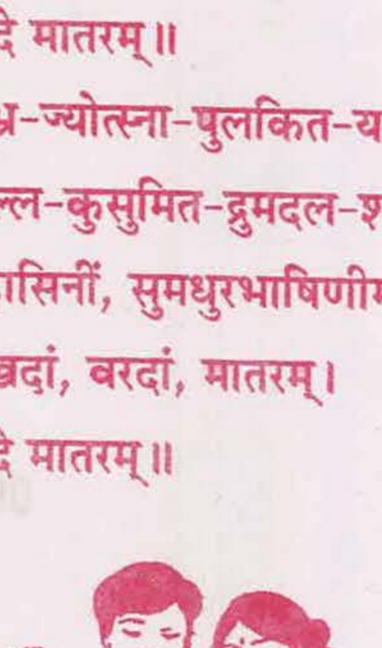

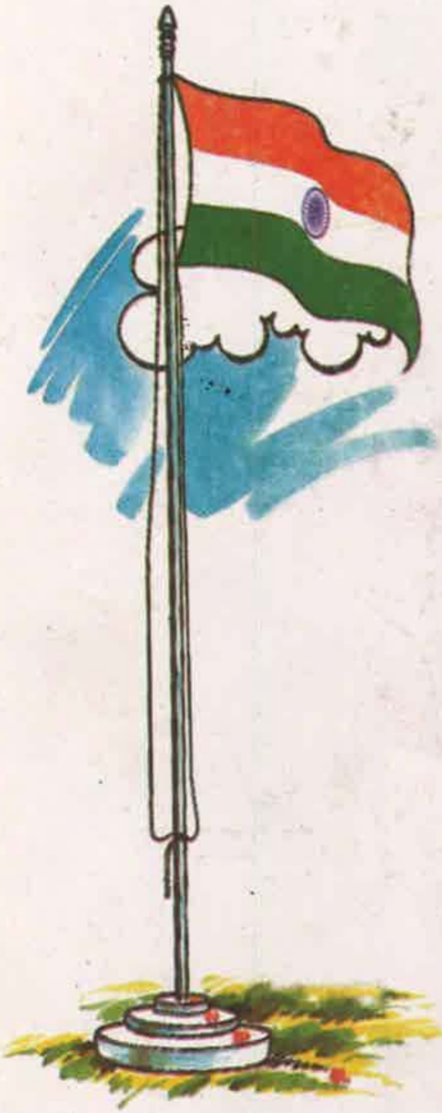

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग,
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

00424

BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना-1

धनराज प्रिंटिंग प्रेस, कुनकुन सिंह लेन, पटना-800004.